कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (12) खण्ड -{23}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- अभी आप ऐसे खुशबूदार वा आकर्षण मूर्त बनते हो तब आपके यादगार मन्दिर में भी ..... आदि से खुशबू करते हैं ?

A- फूल-माला

B- धूप बत्ती

C- गुलाब

D- अगरबत्ती

प्रश्न सं 2- कोई को क्या नशा, कोई को क्या नशा रहता है - मैं फलाना हूँ, ऐसे हूँ.....इनको (ब्रह्मा को) भी नशा

था ना -

A- बड़ा व्यापारी

B- बड़ा जौहरी

C- बहुमूल्य रत्नों का जानकार

D- रत्नों का सौदागर

प्रश्न सं 3- अगर महारथी से भी ग़लती होती है तो उस समय वो महारथी नहीं.....?

A- प्यादा है

B- परवश है।

C- माया के वश है

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 4- इनमे से कौनसा सही नहीं है?

A- बाप कहते हैं कि मेरे से भी तुम्हारा जास्ती पार्ट है।

B- तुमने आलराउन्ड पार्ट बजाया है तो थके भी तुम होंगे इसलिए लिखा हुआ है - चरण दबाये हैं।

C- माया बड़ा चूहा है - आधाकल्प खाते-खाते भारत को कौड़ी जैसा बना दिया है।

D- सारे ड्रामा में हीरो-हीरोइन पार्ट है शिवबाबा का।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न 5- बापदादा आप सभी बच्चों को जब भी देखते हैं, मिलते हैं तो हर एक बच्चे के मस्तक में ..... चमकता हुआ देख हर्षित होते हैं।

A- सितारा

B- डायमंड

C- लकीर

D- मणी

प्रश्न 6- सम्मेलन का अर्थ क्या है?

A. मधुबन में कान्फ्रेंस

B. बापदादा मिलन।

C. बाप और बच्चों का मिलन।

D. सर्व आत्माओं का मिलन।

प्रश्न सं 7- कर्म में धारण करने वाली कौन सी बात है, जिससे इस सफलता के स्वरूप को प्रैक्टिकल में ला सकते हो ?

A. साक्षीपन

B. प्युरिटी

C. साक्षात्कार मूर्त

D. धारणामूर्त

प्रश्न सं 8- इनमें से कौनसा सही नहीं है ?

A. याद से बुद्धि सोने का बर्तन बन जाती है, जिसमें धारणा होती है।

B. ऐसे समझो कि बाप अन्तर्यामी है।

C. ऐसे नहीं, सिर्फ एक जगह बैठ याद करना है। चलते-फिरते भोजन खाते

भी बाप को याद करो।

D. उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 9- तुम हो लाइट हाउस। सबको ठिकाने पर लगाने वाले। तुम कैसे अच्छे लाइट हाउस बनते हो।
तुम..... हो।

A. सर्जन भी हो

B. सर्राफ भी हो

C. धोबी भी हो

D. A,B, C

E- A और C

प्रश्न सं 10- महारथी बनने लिए कौन सी बातें याद रखना है ?

A. अपने को सदैव साथी के साथ रखो।

B. साथी और सारथी, वह है महारथी।

C. सदा बाप का साथ, वह महारथी

D. A और B

E. A और C

प्रश्न सं 11- शक्ति वा ....की सूरत ऐसी देखाई दे जो कोई भी आसुरी लक्षण वाले हिम्मत न रख सके।

A. देही अभिमानी

B. पाण्डवों

C. शूरवीरता

D- दिव्यता

प्रश्न सं 12- यह बुद्धि में याद रहे - हम अभी पुरूषोत्तम संगमयुग पर पुरूषोत्तम बन रहे हैं। और यह जो..... है, उनसे बाबा हमको छुटकारा दिलाने आया है।

A. माया का जाल

B. विकारों का भूत

C. लोहे की जंजीरें

D. रावण का पिजड़ा

प्रश्न सं 13- पिछाड़ी में आने वाले जो ऊंच पद पाते हैं उसका आधार .....

A. ज्ञान

B. याद

C. धारणा

D. सेवा

E. उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 14- माला के मणके कौन सी विशेषता से बनते हैं?

A. एकमत होकर एक ही धागे में पिरोये जाते हैं।

B. एक ही मत पर चलने वाले और आपस में भी एकमत हो

C. एक जैसे मणके हैं तो एक धागे में पिरोये जाते हैं।

D. उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 15- अपने को मिटाना अर्थात्.....?.

A. अपने पुराने संस्कारों को मिटाना।

B. पुराने संस्कार ही सर्व के सहयोगी बनने में विघ्न डालते हैं।

C. दूसरे का संस्कार मिटाने के लिए नहीं कह रहे हैं।

D. अपने संस्कार मिटायेंगे तो दूसरे आपको स्वयं ही फालो करेंगें।

प्रश्न सं 16- इनमे से कौनसा सही नहीं है ?

A. औरों से ममत्व मिटा दो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।

B. सबसे अच्छा पानी तो तालाब का होता है।

C. पढ़ेंगे-लिखेंगे होंगे विश्व के मालिक, नहीं तो कम पद।

D. उपरोक्त सभी सही है।

भाग (12) खण्ड {23} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 D - *अगरबत्ती*

सदा स्मृति रहे कि हम भगवान के बगीचे के रूहानी गुलाब हैं। रूहानी गुलाब अर्थात् कभी भी रूहानियत से दूर होने वाले नहीं। जैसे फूलों में खुशबू समाई हुई होती है, ऐसे आप सबमें रूहानियत की खुशबू ऐसी समाई हुई हो जो ऑटोमेटिक चारों ओर फैलती रहे और सबको अपनी ओर आकर्षित करती रहे।

अभी आप ऐसे खुशबूदार वा आकर्षण मूर्त बनते हो तब आपके यादगार मन्दिर में भी अगरबत्ती आदि से खुशबू करते हैं।

उत्तर सं 2 B - *बड़ा जौहरी*

हर एक को नशा तो रहता है ना। अभी बिड़ला है, उनको अपने धन का नशा होगा। समझेंगे – मैं सबसे साहूकार हूँ। परन्तु तुम जानते हो – जो आज साहूकार हैं वह फिर गरीब बन जायेंगे। तुम्हारी और अन्य मनुष्यों की बुद्धि में रात-दिन का फ़र्क है। कोई को क्या नशा, *कोई को क्या नशा रहता है – मैं फलाना हूँ, ऐसे हूँ.....। इनको (ब्रह्मा को) भी नशा था ना – मैं बड़ा जौहरी हूँ।* अभी समझते हैं वह सभी नशे कौड़ी मिसल हैं।

उत्तर सं 3 B - *परवश*

जब जानते हो तो जानने वाला क्या, क्यों करेगा? वो जानता है कि ये इसलिए होता है। क्या का जवाब स्वयं ही बुद्धि में आयेगा कि माया के प्रभाव के परवश है। चाहे महारथी हो,

चाहे प्यादा हो। *अगर महारथी से भी ग़लती होती है तो उस समय वो महारथी नहीं है, परवश है।* तो परवश वाला कहाँ भी लहर में लहरा जाता है लेकिन आप उस रूप में देखते हो कि ये महारथी होकर कर रहा है! उस समय महारथी नहीं, परवश है।

उत्तर सं 4 E - *उपरोक्त सभी सही हैं।*

(A) सतयुग-त्रेता में तुम जब सुख भोगते हो तो उस समय बाप का कोई पार्ट नहीं। *बाप कहते हैं कि मेरे से भी तुम्हारा जास्ती पार्ट है।* तुम सुख में रहते हो तो मैं निर्वाणधाम में हूँ। मेरा कोई पार्ट ही नहीं।

(B) तुमने आलराउन्ड पार्ट बजाया है तो थके भी तुम होंगे इसलिए लिखा हुआ है – चरण दबाये हैं। बाप कहते हैं – बच्चे, तुम थक गये होंगे। तुमने आधाकल्प भक्ति की, दर-दर धक्के खाये हैं।

(C) कोई को पता नहीं है हमारा दुश्मन कौन है? हम कंगाल कैसे बने? *माया बड़ा चूहा है – आधाकल्प खाते-

खाते भारत को कौड़ी जैसा बना दिया है।* बड़ा ही बलवान है।

(D) तुम तो जानते हो आत्मा किस देश से आई है? क्यों आई है? सारा चक्र बुद्धि में है। *सारे ड्रामा में हीरो-हीरोइन पार्ट है शिवबाबा का।* शिवबाबा के साथ पार्टधारी कौन-कौन हैं? पहले-पहले जन्म देते हैं – ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को फिर तुम बच्चों को। तुम बाप के साथ मददगार ठहरे।

उत्तर सं 5 - *सितारा*

तो बापदादा देख रहे थे कि मेरे बच्चों का कितना बड़ा भाग्य का *सितारा* हर एक के मस्तक पर चमक रहा है। ऐसा भाग्य का सितारा आपको अपने में दिखाई देता है? सदा चमकता हुआ दिखाई देता है या कभी बहुत अच्छा चमकता है और कभी सितारे की चमक कम हो जाती है? यह भाग्य का सितारा विचित्र सितारा है। तो बापदादा आप सभी बच्चों को जब भी देखते हैं, मिलते हैं तो हर एक बच्चे के मस्तक में सितारा चमकता हुआ देख हर्षित होते हैं।

उत्तर सं 6- D - *सर्व आत्माओं का मिलन*

सम्मेलन कर रहे हो। सम्मेलन का अर्थ क्या है? *सर्व आत्माओं का मिलन।* सर्व आत्माओं का मिलन किससे करायेंगे? *बाप से।* सम्मेलन का हर कार्य करते भी यह कभी नहीं भूलना कि हम विश्व के आगे साक्षात्कारमूर्त हैं। साक्षात्कार मूर्त बनने से आप के द्वारा बापदादा का साक्षात्कार स्वत: ही होगा।

उत्तर सं 7- A - *साक्षीपन*

मुख्य एक बात ध्यान में रखने और कर्म में धारण करने वाली कौन सी है, जिससे इस सफलता स्वरुप को प्रैक्टिकल में ला सकते हो? वह कौन सी बात है? बहुत सहज है। मुश्किल बात को ध्यान देकर धारण करते हैं और सहज बात को छोड़ देने से सहज की धारणा देरी से होती है। यह मालूम है? समझा जाता है यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। हो जाएगी। फिर होता क्या है? हो जाएगी, हो जाएगी करते-करते ध्यान से निकल जाती है। इसलिए धारणा रूप भी नहीं होते। तो वह कौन-सी एक बात है। अगर उस बात को धारण कर लें तो

सफलता स्वरूप बन सकते हैं। *(साक्षीपन) हाँ यह बात ठीक है।*

उत्तर सं 8- B - *ऐसे समझो कि बाप अन्तर्यामी है।*

मुख्य है याद, इसमें विघ्न पड़ते हैं। *(A) याद से बुद्धि सोने का बर्तन बन जाती है, जिसमें धारणा होती है।* कहावत है शेरनी का दूध सोने के बर्तन में ठहरता है। इस बाप के ज्ञान धन के लिए भी सोने का बर्तन चाहिए। वह तब होगा जब याद की यात्रा में रहेंगे। याद नहीं करेंगे तो धारणा नहीं होगी। *(B) ऐसे मत समझो कि बाप अन्तर्यामी है।* कुछ बोला और हुआ – यह तो भक्ति मार्ग में होता है। बाप को याद करना है फिर खुद को भी आत्मा समझ कुछ न कुछ उनकी आत्मा को भी याद करना है। यह जैसे सर्च लाइट देना होता है। *(C) ऐसे नहीं, सिर्फ एक जगह बैठ याद करना है। चलते-फिरते भोजन खाते भी बाप को याद करो।* दूसरे को करेन्ट देना है

उत्तर सं 9-. D. A,B, C

तुम हो लाइट हाउस। सबको ठिकाने पर लगाने वाले। तुम कैसे अच्छे लाइट हाउस बनते हो। ऐसी कोई बात नहीं जो तुमसे लागू न होती हो। *तुम सर्जन भी हो, सर्राफ भी हो, धोबी भी हो।* सभी खूबियां (विशेषतायें) तुम्हारे में आ जाती हैं। महिमा तुम्हारी भी हो जाती है, परन्तु नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार।

उत्तर सं 10-D. A और B दोनों सही

महारथी बनने लिए सिर्फ दो बातें याद रखो। कौन सी? *एक तो अपने को सदैव साथी के साथ रखो। साथी और सारथी, वह है महारथी।* पुरुषार्थ में कमजोरी के दो कारण हैं। बाप के स्नेही बने हो लेकिन बाप को साथी नहीं बनाया है। अगर बापदादा को सदैव साथी बनाओ तो जहाँ बापदादा साथ है वहाँ माया दूर से मूर्छित हो जाती है।

उत्तर सं 11. C. शूरवीरता

शक्ति वा शूरवीरता की सूरत ऐसी देखाई दे जो कोई भी आसुरी लक्षण वाले हिम्मत न रख सकें। लेकिन अभी

तक आसुरी लक्षण के साथ-साथ आसुरी लक्षण वाले कहाँ-कहाँ आकर्षित कर लेते हैं।

उत्तर सं 12. D. रावण का पिजड़ा

यह बुद्धि में याद रहे - हम अभी पुरूषोत्तम संगमयुग पर पुरूषोत्तम बन रहे हैं। और *यह जो रावण का पिंजड़ा है, उनसे बाबा हमको छुटकारा दिलाने आया है।* जैसे कोई पंछी को पिंजड़े से निकाला जाता है तो वह बहुत खुश होकर उड़कर सुख पाते हैं। तुम बच्चे भी जानते हो यह रावण का पिंजड़ा है, अनेक प्रकार के दु:ख ही दु:ख हैं। अब बाप आये हैं इस पिंजड़े से निकालने के लिए।

उत्तर सं 13- B - *याद*

याद के लिए बहुत एकान्त भी चाहिए। *पिछाड़ी में आने वाले जो ऊंच पद पाते हैं उसका आधार भी याद है।* उन्हें याद बहुत रहती है। याद से याद मिलती है। जब बच्चे बहुत याद करते हैं तो बाप भी बहुत याद करते हैं। वह कशिश करते हैं।

उत्तर सं 14- D - *उपरोक्त सभी*

माला के मणके कौन सी विशेषता से बनते हैं? मणकों की विशेषता यही है जो *(A) एकमत होकर एक ही धागे में पिरोये जाते हैं।* एक की ही लगन एकरस स्थिति और एकमत तो सब एक ही एक। *(C) एक जैसे मणके हैं तो एक धागे में पिरोये जाते हैं ना।* तो *(B) एक ही मत पर चलने वाले और आपस में भी एकमत हो।* संकल्प भी एक से। दो मत होती हैं तो वह दूसरी अर्थात् 16000 की माला के दाने बन जाते हैं। एक मत के लिए ऐसा वातावरण बनाना है।

उत्तर सं 15- A - *अपने पुराने संस्कारों को मिटाना*

सर्व का सहयोगी बनने के लिए अपने आप को मिटाना भी पड़ता है। इस कार्य से हटेंगे नहीं। तो *अपने को मिटाना अर्थात् अपने पुराने संस्कारों को मिटाना।* पुराने संस्कार ही सर्व के सहयोगी बनने में विघ्न डालते हैं। तो अपने पुराने संस्कारों को मिटाना है। दूसरे का संस्कार मिटाने के लिए

नहीं कह रहे हैं। अपने संस्कार मिटायेंगे तो दूसरे आपको स्वयं ही फालो करेंगे।

उत्तर सं 16- B - सबसे अच्छा पानी तो तालाब का होता है।

भगवानुवाच – अपने को आत्मा समझो, मुझ बाप को याद करो। *(A) औरों से ममत्व मिटा दो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।* फिर कभी बीमार होंगे नहीं। काल खायेगा नहीं। आयु भी बड़ी होगी। *(B)* रोज़ तुम स्नान करते हो, पानी तो सब जगह सागर से ही आता है। *सबसे अच्छा पानी तो कुएं का होता है।* नदियों में तो किचड़ा पड़ता रहता है। कुएं का पानी तो नेचुरल शुद्ध होता है। *(C)* इसमें जितना जो पढ़ेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। *पढ़ेंगे-लिखेंगे होंगे विश्व के मालिक, नहीं तो कम पद।* परन्तु वह राजाई है सुख की। यहाँ है दु:ख की।

प्रश्न सं 1- तख्त नशीन कब बनेंगे ?

A. जब अब समीप बनेंगे।

B. जितना जो समीप होगा उतना समानता में रहेगा।

C. तुम बच्चों के नैनों को कोई देखे तो उनको मुक्ति जीवन मुक्ति का रास्ता दिखाई दे।

D. ऐसा नयनों में जादू हो। तो आप के नैन कितनी सेवा करेंगे।

प्रश्न सं 2- बेहद का बाप मिला है उसकी याद में..... ?

A. अतीन्द्रिय सुख है।

B. सुख ही सुख है।

C. करामात है।

D. A और C

E. A,B, C

प्रश्न सं 3- सतयुग में रावण की एफीजी नहीं बनाई जाती क्यों ?

A. सब पावन होते हैं।

B. सब निर्विकारी होते हैं।

C. रावण का खात्मा हो जाता है।

D. सब अहिंसक होते हैं।

प्रश्न सं 4- तुम बच्चे जब बैठते हो, चलते फिरते हो तो बुद्धि में क्या याद रखो?

A. 84 का चक्र

B. नई पवित्र दुनिया

C. बाजोली का खेल

D. उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 5- इनमें से कौनसा सही नहीं है?

A. 7 रोज़ में तुमको लायक ब्राह्मण-ब्राह्मणी बन जाना है।

B. पढ़ते-पढ़ाते नहीं हैं तो अन्दर में समझना चाहिए कि मैं पूरा पढ़ा नहीं हूँ, तब पढ़ा नहीं सकता।

C. जिनको शौक है, समझते हैं याद से ही हमारे पाप कटते हैं, वो अच्छी रीति पुरूषार्थ करते हैं।

D. उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 6- भाग्य का आधार ..... है, बिना ..... के भाग्य नहीं मिलता ?

A. त्याग

B. तपस्या

C. सेवा

D. मेहनत

प्रश्न सं 7- रूहानी अ्थॉरिटी के साथ निरहंकारी बन सत्य ..... का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाने वाले सच्चे सेवाधारी भव ?

A. बाप

B. ज्ञान

C. शिक्षक

D. सेवा

प्रश्न सं 8- सर्प का मिसाल भी सतयुग के लिए है। एक खाल छोड़ दूसरी लेते हैं, इसको कहा जाता है ?

A. बेहद का वैराग्य

B. जडजड़ीभूत

C. दैवी दुनिया

D. देही अभिमानी

प्रश्न सं 9- तुमको कोई दुःख के आँसू नहीं आने चाहिए, क्यों ?

A. बेहद का बाप मिला है।

B. सतयुग में जाएंगे

C. यह सच्चा ड्रामा है।

D. बनी बनाई बन रही

प्रश्न सं 10- सबसे जास्ती फिकर किस बात की रहती है ?

A. माया की

B. विकर्म विनाश करने की

C. बाप समान बनने की

D. बाप को याद करने की

प्रश्न सं 11- बाबा पूछते हैं कि तुम क्या बनेंगे ?

A. लक्ष्मी नारायण

B. सूर्यवंशी

C. देवी देवता

D. विश्व के मालिक

प्रश्न सं 12 - भगवान किन बच्चों को मिलता ?

A- जो भगवान को याद करते हैं

B- जिन्होंने शुरू से भक्ति की है।

C- जो भगवान की सेवा करते हैं।

D- जो यह ज्ञान सुनते हैं।

प्रश्न 13- आत्माएँ निराकारी दुनिया में बाप के साथ रहती है, फिर यहाँ आकर क्या करती हैं..... ?

A- जन्म मरण के चक्र में फंस जाती हैं।

B- सुख दुःख भोगती हैं।

C- सतो रजो तमो का पार्ट बजाती हैं।

D- ज्ञान भक्ति वैराग्य में जाती हैं।

प्रश्न 14- बाप आकर जंगल को गार्डन ऑफ पलावर्स

बनाते हैं, इसलिए उनको क्या कहते हैं.?

A- माली

B- बागवान

C- बबुलनाथ

D- पतित पावन

प्रश्न 15 - किसकी पूजा करते करते नीचे गिरते आये हैं ?

A- मूर्तियों की

B- रावण की

C- भाइयों की

D- शास्त्रों की

प्रश्न 16- बाबा ने समझाया है, तुम सब कौन हो ?

A- पार्वतियां

B- द्रोपदी

C- अर्जुन

D- A और C

E- A, B और C

भाग (12) खण्ड {24} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1. A. जब अब समीप बनेंगे।

तुम हरेक बच्चे को पुरुषार्थ करना है तख्त नशीन बनने का न कि तख्त नशीन के आगे रहने का। *तख्त नशीन तब

बनेंगे जब अब समीप बनेंगे।* जितना जो समीप होगा उतना समानता में रहेगा। तुम बच्चों के नैनों को कोई देखे तो उनको मुक्ति जीवन मुक्ति का रास्ता दिखाई दे। ऐसा नयनों में जादू हो।

उत्तर 2. E. A,B, C

A अपनी शांत स्वरूप स्थिति में स्थित तभी रह सकेंगे जब अंतर्मुखी बन निरन्तर *एक बाप की याद में रहेंगे और सर्व सम्बंधों का सुख एक बाप से लेते हुए अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहेंगे।*

B तुम व्यापारी हो बाप से कितना बड़ा व्यापार करते हो। *जितना बाप को जास्ती याद करेंगे उतना बाप से अथाह सुख पायेंगे।* तुमको कोई पूछे बोले वाह हम तो बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा ले रहे हैं।

C यह तो समझाया है कि मनुष्य को कभी भगवान नहीं कहा जाता। तो *अब जबकि बेहद का बाप मिला है, उसकी याद में ही करामत है।* जितना पतित-पावन बाप को

याद करेंगे, उतना पावन बनते जायेंगे।अर्थात तीनों ऑप्शन सही है।

उत्तर सं 3. C. रावण का खात्मा हो जाता है।

सतयुग में नया शरीर मिले तब सम्पूर्ण कहेंगे। फिर *रावण का खात्मा हो जाता है। सतयुग में रावण की एफीजी नहीं बनाई जाती है।* तो तुम बच्चे जब बैठते हो, चलते-फिरते हो तो बुद्धि में यह याद रहे। अब हमने 84 का चक्र पूरा किया है फिर नया चक्र शुरू होता है। वह है ही नई पवित्र दुनिया, नया भारत नई देहली।

उत्तर सं 4. D. उपरोक्त सभी

तुम बच्चे जब बैठते हो, चलते-फिरते हो तो बुद्धि में यह याद रहे। अब हमने *84 का चक्र* पूरा किया है फिर नया चक्र शुरू होता है। वह है ही *नई पवित्र दुनिया,* नया भारत नई देहली। बच्चे जानते हैं पहले जमुना का कण्ठा है, जहाँ पर परिस्तान बनना है। बच्चों को बहुत अच्छी रीति समझाया जाता है, पहले-पहले तो बाप को याद करो। भगवान बाप

पढ़ाते हैं। वही बाप टीचर गुरू है, यह भला याद रखो। बाबा ने यह भी समझाया था कि तुम *बाजोली खेलते* हो। वर्णों का चित्र भी बहुत जरूरी है। सबसे ऊपर है शिवबाबा फिर चोटी ब्राह्मण। यह समझाने के लिए बाबा कहते हैं। अच्छा यह बुद्धि में रखो कि हम 84 जन्मों की बाजोली खेलते हैं। अर्थात सभी ऑप्शन सही हैं।

उत्तर सं 5 D - *उपरोक्त सभी सही हैं।*

बाबा कहते हैं *(A) 7 रोज़ में तुमको लायक ब्राह्मण-ब्राह्मणी बन जाना है।* सिर्फ नाम का ब्राह्मण-ब्राह्मणी नहीं चाहिए। ब्राह्मण-ब्राह्मणी वह जिनके मुख में बाबा का गीता ज्ञान कण्ठ हो। *(B)* सर्विस का सबूत देना चाहिए, तब समझ में आयेगा कि यह ऐसा पद पायेगा। फिर वह कल्प-कल्पान्तर के लिए हो जायेगा। *पढ़ते-पढ़ाते नहीं हैं तो अन्दर में समझना चाहिए कि मैं पूरा पढ़ा नहीं हूँ, तब पढ़ा नहीं सकता।* बाबा कहते हैं पढ़ाने लायक क्यों नहीं बनते हो! *(C)* एवर तन्दरूस्त बनाने के लिए यह सब सिखाया जाता है। *जिनको शौक है, समझते हैं याद से ही हमारे पाप कटते

हैं, वो अच्छी रीति पुरूषार्थ करते हैं।* कोई तो लाचार टाइम पास कर रहे हैं। अपनी-अपनी जांच करनी है।

उत्तर सं 6 A - *त्याग*

हम जब विकारों का त्याग करते है तो देवताई संस्कार हमारे में आने लगते है... त्याग करना है तो उन बन्धनों का करो जिस कारण से आत्मा मैली हुई है, इसी त्याग में स्वर्णिम भाग्य समाया हुआ है। कुछ पाने के लिए कुछ छोड़ना पड़ता है इसलिए कहा गया है *भाग्य का आधार त्याग है, बिना त्याग के भाग्य नहीं मिलता।*

उत्तर सं 7- B - *ज्ञान*

रूहानी अथॉरिटी के साथ निरहंकारी बन सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाने वाले सच्चे सेवाधारी भव

जैसे वृक्ष में जब सम्पूर्ण फल की अथॉरिटी आ जाती है तो वृक्ष झुक जाता है अर्थात् निर्माण बनने की सेवा करता है। ऐसे रूहानी अथॉरिटी वाले बच्चे जितनी बड़ी अथॉरिटी उतने

निर्माण और सर्व के स्नेही होंगे। अल्पकाल की अथॉरिटी वाले अंहकारी होते हैं लेकिन सत्यता की अथॉरिटी वाले अथॉरिटी के साथ निरंहकारी होते हैं - यही सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप है। सच्चे सेवाधारी की वृत्ति में जितनी अथॉरिटी होगी उसकी वाणी में उतना ही स्नेह और नम्रता होगी।

उत्तर सं 8- A - *बेहद का वैराग्य*

देवताओं को कभी काल नहीं खाता। वहाँ काल के जमघट होते नहीं। तो यह टॉपिक भी बहुत अच्छी है - मनुष्य काल पर विजय कैसे कर सकते हैं। यह सारी ज्ञान की बातें हैं। भारत अमरलोक था, कितनी बड़ी आयु थी। *सर्प का मिसाल भी सतयुग के लिए है। एक खाल छोड़ दूसरी लेते हैं, इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य।*

उत्तर सं 9. C. यह सच्चा ड्रामा है।

मनुष्यों को ही पता होता है ना कि यह बेहद का कर्मक्षेत्र है, जहाँ सभी आकर खेल करते हैं। बनी बनाई बन

रही... बाप कहते हैं बच्चे चिंता उनकी की जाए जो अनहोनी हो। हो गया सो ड्रामा में था फिर उनका चिंतन काहे का करें। हम ड्रामा को देखते हैं। ड्रामा में जब कोई ऐसा दर्दनाक सीन होता है तो मनुष्य देखकर रोते हैं। अब वह तो हुआ झूठा ड्रामा। *यह तो सच्चा ड्रामा है। सच-सच करते हैं। परन्तु तुमको कोई दु:ख के आंसू नहीं आने चाहिए।* साक्षी होकर तुमको देखना है। जानते हो यह ड्रामा है, इसमें रोने की क्या दरकार है। पास्ट इज़ पास्ट। कब विचार भी नहीं करना चाहिए।

उत्तर सं 10. D. बाप को याद करने की

बाप ने तुमको ही तुम्हारे 84 जन्मों की कहानी बताई है। सेन्सीबुल जो हैं वह हिसाब से समझ सकते हैं। इस्लामी आयेंगे तो एवरेज कितने जन्म लेंगे। एक्यूरेट हिसाब की तो दरकार नहीं। इन बातों में तो कोई फिकरात की बात नहीं। *सबसे जास्ती फिकर यह रहती है कि हम बाबा को याद करते रहें।* बस एक ही फिकर है, एक को याद करने का।

उत्तर सं 11. B. सूर्यवंशी

अब तुम समझते हो हम स्वर्ग के मालिक थे फिर 84 जन्म ले बिल्कुल शूद्र बुद्धि बन गये हैं। क्या हाल हो गया है। अब फिर पुरूषार्थ कर क्या बनते हो! *बाबा पूछते भी हैं ना कि तुम क्या बनेंगे? तो सब हाथ उठाते हैं सूर्यवंशी बनेंगे।* हम तो मात-पिता को पूरा फालो करेंगे। कम पुरूषार्थ थोड़े ही करेंगे। सारी मेहनत याद और आप समान बनाने पर है इसलिए बाप कहते हैं जितना हो सके सर्विस करना सीखो।

उत्तर 12. B- जिन्होंने शुरू से भक्ति की है।

जिन्होंने शुरू से भक्ति की है उन्हें ही भगवान मिलता है। बाबा ने यह हिसाब बतलाया है कि सबसे पहले तुम भक्ति करते हो इसलिए तुम्हें ही पहले-पहले भगवान द्वारा ज्ञान मिलता है, जिससे फिर तुम नई दुनिया में राज्य करते हो। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प मुझे याद किया है अब मैं आया हूँ, तुम्हें भक्ति का फल देने।

*उत्तर 13.*C- सतो रजो तमो का पार्ट बजाती हैं।*

आत्माएं निराकारी दुनिया में रहती है फिर यहां आकर सतो रजो तमो में पार्ट बजाती आती है। चीज सतोप्रधान से रजो ,तमो में आना पड़ता है।पहले जब लोग मुक्तिधाम से आते हैं, तो सतोप्रधान होते हैं. फिर सतो, रजो, तमो में आते-आते, इस समय सब तमोप्रधान बन गए हैं. सब अपना-अपना हिसाब-किताब चुक्तू कर अंत में सतोप्रधान बनते हैं।जो भी धर्म स्थापक आते हैं, वह किसको सद्गति नहीं देते. वह सिर्फ अपना धर्म स्थापन कर फिर उसकी वृद्धि में लग जाते हैं. वे अपने ही धर्म में पुनर्जन्म लेते हैं और सतो, रजो, तमो में आते हैं।

उत्तर 14. *C. बबुलनाथ*

बाप समझाते है की फूल से ही सुगन्ध लेते हैं। कांटे से कब सुगन्ध लेते हैं क्या? यह है ही कांटों का जंगल। निराकार बाप कहते हैं मैं आकर गॉर्डन ऑफ फ्लावर बनाता हूँ, इसलिए बबुलनाथ नाम भी रखते हैं। बबुल कांटों को फ्लावर बनाते हैं इसलिए महिमा गाई जाती है - कांटों को फूल बनाने वाला नाथ।

उत्तर 15. *C- भाइयों की*

आत्मा कहती है मुझ निर्गुण हारे मे कोई गुण नाही। कोई भी देवता के मंदिर मे जायेंगे तो उनके आगे ऐसे कहेंगे। कहना चाहिए बाप के आगे। उसको छोड ब्रदर्स को पूजने लगते है, यह देवताये ब्रदर्स ठहरे ना ब्रदर्स से कुछ मिलना नही है। भाईयोंकी पूजा करते करते नीचे गिरते आये है।

उत्तर 16. *E* A,B और C सही

बाप समझाते हैं तुम सब पार्वतियां हो। शिव अमरनाथ तुमको कथा सुना रहे हैं। दूसरी कोई पार्वती है नहीं। अर्जुन भी एक नहीं, तुम सब अर्जुन हो। द्रोपदियां भी तुम सब हो। वह दुशासन हैं जो नंगन करते हैं। तब पुकारते हैं बाबा हमारी रक्षा करो। बाबा कहते हैं - बच्चे, नंगन कभी नहीं होना। दिखाते हैं ना जब द्रोपदी को नंगन कर रहे थे तो फिर श्रीकृष्ण ने उनको 21 चीर दिये। अब 21 साड़ी पहनी जाती हैं क्या? यह भी जैसे एक खेल दिखाते हैं। श्रीकृष्ण ऊपर से साड़ियां देते जाते हैं। अब 21 साड़ियां कैसे पहन सकेंगे? वास्तव में